कथा-कहानी मंच

अस्मिता लहू-लुहान

राजेश कुमार बोद्ध

जन्मतिथि: 26 फरवरी 1974

जन्मस्थान: गोरखपुर, उ. प्र.

अभिरूचि: लिखना व पढ़ना

सम्प्रति: सामाजिक कार्यकर्ता

संपादक: प्रबुद्ध विमर्श ष हिन्दी मासिक पत्रिका

कृतियां:

1- सामाजिक क्रांति के नायक मा0 कांशीराम, 2- हमारे राष्ट्र गौरव दलित संतों का जीवन दर्शन, 3- तथागत बुद्ध कबीर और रैदास, 4- संत कबीरदास, 5- संत शिरोमणि गुरु रविदास और 15 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित,

पुरस्कार एवं सम्मान:-

9 से अधिक पुरस्कार व सम्मान देशभर से प्राप्त हुए

संपर्क:

Email:prabuddhvimarshgkp@gmail-com

वह बिल्कुल नंगी थी, चमन ठाकुर ने उसके बालों को कस कर पकड़ रखा था और चिल्ला-चिल्लाकर गांव गांव वालों को डरा धमका रहा था, 'देख लो! इस दुष्ट औरत की हालात, आगे भी अगर कोई गुर्राएगा, तो उसका भी यही हाल होगा।' ठाकुर के दोनों बॉडी-गार्ड बंदूक लिये सीना ताने इधर-उधर घूम रहे थे। मार खाकर राखी बेहाल हो गयी थी। उसका कसूर केवल इतना था कि वह अपने बेटे के लिए ठाकुर से लड़ गयी थीी बेटे तो सबके एक से होते हैं। सभी को अपने बेटा-बेटी प्यारी औलाद होती है।

ठाकुर के बेटे ने गलती की तो उसके बाप का फर्ज यही बनता था कि वह अपने बेटे को डॉटे या समझाए।

मगर ऐसा नहीं हुआ।

राखी का लड़का नौ साल का है और ठाकुर का लड़का आठ साल का था। दोनों एक ही कक्षा में संग-संग पढ़ने जाते थे। एक दिन ठाकुर के लड़के ने गाली दी और उसका कपड़ा फाड़ दिया तो राखी के बेटे ने भी गाली दे दी फिर आपस में दोनों लड़ पड़े, राखी का बेटा ठाकुर के बेटे पर भारी पड़ गया।

बात तो वहीं खत्म हो गयी थी, मगर राखी ठहरी नीची जाति की और नीची जाति के लोग ठाकुरों के मुंह लग जाएं यह कैसे संभव हो सकता है? उसी शाम को सारे के सारे ठाकुर नीची जाति पर टूट पड़े, उन्होंने मिल कर राखी को मारा-पीटा और अंत में उसे नंगा कर दिया।

लाठी और बंदूक के आगे किसकी हिम्मत थी जो ठाकुरों से मुकाबला करे, हालांकि पुलिस थाना भी पास में ही था पर वहा। भी ठाकुर भरे पड़े थे और ठाकुरों का जलवा था।

शाम तक यह खबर पूरे गांव गांव गांव में फैल गई कि राखी के बेटे ने ठाकुर परिवार पर हाथ उठाया। ये शब्द सुनकर ठाकुर बिरादरी के लोगों में खलबली मच गई। बिरादरी के नाम पर सबके मन में आक्रोश

पैदा हो गया।

दूसरे दिन शाम को गांव के ठाकुर राखी के घर पहुंचे और घर में घुस कर राखी को घसीटते हुए बाहर ले आये और उसकी पिटाई शुरू कर दिया। तत्पश्चात् उसे एक कमरे में बंद करके बाहर से ताला लगा दिया और चाबी लेकर ठाकुर चलें गये। राखी मदद के लिए चीखती चिल्लाती रही लेकिन उसकी पुकार सुनने वाला न था। उसके देवर-देवरानी तथा अन्य रिश्तेदार जो कि पड़ोस में रहते थे खामोशी से यह अत्याचार देखते रहे क्योंकि इन दबंग लोगों से भिड़ने की किसी में हिम्मत नहीं थी। गांव में ठाकुरों का इतना दबदबा था कि गांव का कोई भी व्यक्ति उनके विरोध में एक शब्द भी नहीं बोल सकता था।

अगले दिन राखी को उसी तरह कमरे में भूखा, प्यासा रखा गया। गांव के किसी भी व्यक्ति में इतनी हिम्मत न थी कि राखी को छुड़ा सकता और थाने में जाकर खबर करता।

चमन ठाकुर का बाई पास रोड पर एक बहुत बड़ा होटल था, जहां पर अक्सर पुलिस वाले खाना खाते थे। ठाकुर के पास चार फैक्टरी तथा सात कोटे की दुकान हैं इसलिए उसके पास धन की कमी भी नहीं थी, उसके खिलाफ बोलने की किसी में हिम्मत नहीं थी।

शाम को जैसे ही सूरज अपनी लालिमा लेकर लुप्त हुआ और आसमान ने अंधेरे की काली चादर ओढ़ी, चमन ठाकुर, श्याम सिंह और मुन्ना सिंह राखी के घर पहुंचे और उसे कमरे से बाहर निकालकर मारते-पीटते अपने घर ले जाने लगे। यह देख राखी का बच्चा और उसकी वृद्ध अंधी सास व देवरानी ठाकुर का पैर पकड़ कर गिड़गिड़ाने लगे और हमलावरों के सामने हाथ जोड़ कर राखी को छुड़ाने की कोशिश करने लगे परंतु वे लोग उसे गांव से बाहर एक सुनसान जगह पर ले गये और उसे मार-मार कर बेहोश कर दिया।

राखी को जब होश आया तो इन दरिंदों ने पुनः राखी को मारना-पीटना शुरू कर दिया। जब उससे संतुष्ट नहीं हुए तो उसे निर्वस्त्र कर डाला और फिर उसके साथ जबरदस्ती बारी-बारी से बलात्कार किया, रात भर हैवानियत का नंगा नाच नाचने के बाद इन आतताइयों ने राखी को पुनः उसके घर में लाकर क़ैद कर दिया।

राखी को खाना-पीना देने की किसी ने कोशिश भी की तो उन्हें भी पीटा गया जिससे गांव के लोग भयभीत हो गये। यही नहीं गांव वालों को इतना आतंकित कर दिया गया कि कोई भी व्यक्ति खाना-पीने देने तक की हिम्मत नहीं जुटा पाया। परिवार के अन्य लोगों को घर से निकलने पर पाबंदी लगा दी गई।

ठाकुर बिरादरी के लोग राखी पर अत्याचार करते रहे। राखी के देवर छोटे लाल को किसी तरह बाहर निकलने का मौका मिल गया, वह डरते-डरते थाना भवानीपुर जा पहुंचा और पुरी घटनाक्रम की जानकारी थाना प्रभारी को दी। सूचना पाकर थाना इंचार्ज और सब इंस्पेक्टर पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और ठाकुर परिवार को समझा-बुझा कर ताला खुलवा दिया। उन्होंने केवल इतना ही कहा कि इसे खाना-पानी तो दो वरना मर गई तो क्या होगा। अब और मार-पीट मत करना, इतना कहकर थाना इंचार्ज चल पड़े, पुलिस के जाते ही ठाकुरों ने उसे फिर क़ैद कर दिया। राखी का पक्ष लेने तथा थाने तक जाने की जुर्रत करने पर उसके देवर छोटे लाल को मारा-पीटा। इस घटना से सभी गांव वासी भयभीत हो गये।

रात में दबंग ठाकुर रोज की तरह फिर राखी को अपने घर ले गये और उसको अमानवीय यातनाएं दी। उसके साथ पुनः जबरदस्ती बलात्कार किया गया और उसके नाजुक अंगों पर सरियों से प्रहार किये। राखी के मुंह से गगन भेदी चीखें गंजने लगी, राखी पीड़ा से तड़पती कराहती रही और उनसे दया की भीख मांगती रही लेकिन उन जालिमों को उस पर दया नहीं आई।

राखी ने भागने का प्रयत्न भी किया मगर पकड़ी गयी। उसकी इस हरकत से ठाकुर आग बबुला हो उठा और एक बार फिर उस पर अत्याचार का अमानवीय कृत्य दोहराया गया। जुल्म की शिद्दत बर्दाश्त न कर पाने के कारण राखी पुनः बेहोश हो गयी। होश में आते-आते सुबह के नौ बज गये तब उसे मारते-पीटते ठाकुर उसके घर लाए और फिर घर के पास पहुंच

कर सैकड़ों लोगों के सामने उसे निर्वस्त्र कर दिया गया। उसके जिस्म पर पड़े काले-लाल निशान उन दरिंदों के जुल्म की कहानी बयान कर रहे थे। राखी की साड़ी से उसके हाथ पैर बांध दिये गये फिर उसके जिस्म पर मिट्टी का तेल डाला गया।

राखी की चीख उसकी देवरानी बिमला ने जो कि पड़ोस में रहती थी सुनी, वह अपने छत पर गयी। ठाकुरों के इरादे को देखकर वह छत पर से ही चीखने-चिल्लाने लगी, 'राखी को बचा लो। ये लोग उसे जलाकर मार डालेंगे।'

देवरानी बिमला की चीख पुकार सुनने पर भी किसी पर कोई असर न था। ठाकुर परिवार की औरतें अपनी-अपनी छतों से इस नग्न दृश्य को देख रही थीं। ठाकुर समुदाय के लोगों ने अपनी कार्य-प्रणाली को अंजाम देते हुए माचिस की तीली जलाई और राखी के ऊपर फेंक दिया।

जब अलाव की तरह धू-धू करके एक अबला नारी जलने लगी, तो ठाकुर परिवार उसे तड़पता देखकर ठहाका लगाने लगा। बिमला लगातार चीखें जा रही थी, उसकी चीख पुकार सुनकर अन्य देवरानी ममता और शीला भी दौड़ी, गांव के कुछ समाज सेवक भी दौड़े, लेकिन तब तक राखी का पूरा शरीर जल चुका था। कुछ ही क्षण में आंगन में राखी के शरीर का जला हुआ ढांचा पड़ा था, धुएं से उसका पूरा घर भर गया था।

राखी के ससुर अपनी जान बचाकर वहां से निकल गया और भवानीपुर थाना में जाकर उसने इस लोमहर्षक वारदात की सूचना दी।

इतना गंभीर घटना की सूचना पाकर थाना प्रभारी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी, वे दोपहर का लंच करने के बाद ही दो बजे घटनास्थल पर पहुंचे जबकि घटनास्थल थाने से महज एक किमी की दूरी पर ही था।

थाना प्रभारी के साथ घटना का सूत्रधार ठाकुर चमन सिंह भी आया था। पुलिस ने ठाकुर के घर से चादर मंगाई और लाश को बिना पंचनामे के उठाने का प्रयास करने लगी।

अब तक राखी की देवरानी बिमला का आक्रोश बढ़ गया था, वह घायल शेरनी फूलन देवी और झलकारी बाई का रूप धारण कर पुलिस प्रशासन के सामने आ गई और पुलिस को लाश उठाने पर रोक लगा दी।

काफी जिल्लत के बाद ही लाश उठाकर पोस्टमार्टम हाउस भेजी गयी। सारी घटना घटने के करीब कई घंटे के बाद पुलिस पहुंची, थाना प्रभारी और सीओ भी पहुंचे। तब तक दबंग ठाकुर गांव छोड़कर फरार हो चुके थे। लेकिन बेटे की सजा मां को इतनी बुरी मिलेगी यह तो कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।

दूसरे दिन राखी की देवरानी बिमला के पति को भी ठाकुरों में मार-पीट कर अधमरा कर दिया और उसके घर की दीवार आंगन सब कुछ उजाड़ दिया। अब चमन सिंह ठाकुर राखी की देवरानी बिमला के सिर के बाल पकड़ कर पूरे गांव में नंगा करके घुमा रहा था।

राखी की देवरानी बिमला ने भी हिम्मत से जबाब दिया। अचानक उसने ठाकुर चमन सिंह का गला खूब कसकर पकड़ लिया।

ठाकुर जितना बिमला के हाथ को छुड़ाने की कोशिश करता, उतनी ही उसकी हथेली कसती जाती थी। एक बॉडी-गार्ड रिवाल्वर निकाल कर गोली चलाने ही जा रहा था तब तक बिमला ने अपनी पकड़ कस करके खींच दी।

चमन ठाकुर कटे पेड़ की तरह गिर पड़ा, उसकी जीभ और आंखे बाहर निकल आई। सबके सब ठाकुर की देखभाल में जुट गये थे, तभी अचानक बिमला ने बड़ी होशियारी के साथ बाडी-गार्ड की रिवाल्वर छीन ली। फिर वह कब बेहोश हुई कुछ पता ही नहीं चला।

जब उसे होश आया, तो वह भवानीपुर थाने में थी।

बिमला ने अपने जुल्म का बदला सात लोगों को खत्म करके ले लिया। बिमला अपनी राखी के बारे मे सोच रही थी तभी उसके मन में एक महामानव का ख्याल एवं उनके विचार आया, सोचने लगी कि 'बाबा साहब डॉ आंबेडकर जी ने ठीक ही कहा था कि जुल्म करने वाले से जुल्म सहने वाला ज्यादा गुनाहगार होता है।'

लाज शर्म तो जिस्म ढके रहने तक ही होती है। औरत नंगी हो या ढकी वह हमेशा सबला ही होती है।